International Journal of Social Research and Development
www.socialsciencejournal.net
Online ISSN: 2664-8709
Received: 19-04-2026, Accepted: 20-05-2026, Published: 04-06-2026
Volume 8, Issue 2, 2026, Page No. 93-96

शहरी किशोरियों में गृह समायोजन तथा सामाजिक समायोजन के बीच संबंध का अध्ययन

अरविन्द सिंह यादव, डॉ. योगर्षि राजपूत
[1] शोधार्थी, स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार, भारत
[2] शोध निर्देशक, सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर, स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग, महर्षि विश वामित्र महाविद्यालय बक्सर, बिहार, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijsrd.2026.8.2.8051

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य शहरी किशोरियों में गृह समायोजन तथा सामाजिक समायोजन के बीच संबंध का अध्ययन करना है। किशोरावस्था मानव विकास की एक महत्वपूर्ण अवस्था है, जिसमें व्यक्तित्व, व्यवहार एवं सामाजिक संबंधों का निर्माण तीव्र गति से होता है। इस अवस्था में परिवार तथा समाज दोनों ही किशोरियों के मानसिक, भावनात्मक एवं सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गृह समायोजन से आशय परिवार के सदस्यों के साथ सामंजस्य स्थापित करने, पारिवारिक वातावरण में संतुलन बनाए रखने तथा घर की परिस्थितियों के अनुरूप व्यवहार करने की क्षमता से है। वहीं सामाजिक समायोजन का अर्थ समाज, मित्रों, विद्यालय एवं अन्य सामाजिक समूहों के साथ स्वस्थ संबंध स्थापित करने की योग्यता से है।
इस अध्ययन में शहरी क्षेत्र की किशोरियों को नमूने के रूप में चयनित किया गया है। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है तथा आवश्यक आँकड़ों का संकलन बेल– शमशाद समायोजन प्रश्नावली/मापनी के माध्यम से किया गया है। प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण माध्य, मानक विचलन टी– टेस्ट / सहसंबंध (Correlation) विधि द्वारा किया गया है, जिससे यह ज्ञात किया जा सके कि गृह समायोजन एवं सामाजिक समायोजन के बीच किस प्रकार का संबंध विद्यमान है।
अध्ययन से यह अपेक्षा की जाती है कि जिन किशोरियों का गृह समायोजन अच्छा होगा, उनका सामाजिक समायोजन भी अधिक सकारात्मक एवं संतुलित होगा। यह शोध किशोरियों के पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन को समझने में सहायक सिद्ध होगा तथा अभिभावकों, शिक्षकों एवं परामर्शदाताओं को किशोरियों के समग्र विकास हेतु उपयोगी दिशा–निर्देश प्रदान करेगा।

मूलषब्द: शहरी, किशोरावस्था, किशोरियों, समायोजन, गृह समायोजन, सामाजिक समायोजन

किशोरावस्था मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण विकासात्मक चरण है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक तथा सामाजिक परिवर्तन तीव्र गति से होते हैं। इस अवस्था में किशोरियाँ अपने व्यक्तित्व, व्यवहार और सामाजिक संबंधों का निर्माण करती हैं। उनके समग्र विकास में परिवार तथा समाज दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परिवार वह प्रथम सामाजिक संस्था है जहाँ से किशोरियाँ प्रेम, सुरक्षा, अनुशासन, सहयोग तथा नैतिक मूल्यों को सीखती हैं। परिवार के साथ उचित सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता को गृह समायोजन कहा जाता है।
गृह समायोजन से तात्पर्य है कि किशोरी अपने परिवार के सदस्यों के साथ किस प्रकार सामंजस्य स्थापित करती है, पारिवारिक नियमों का पालन करती है तथा परिवार के वातावरण में स्वयं को कितना सुरक्षित और संतुष्ट महसूस करती है। अच्छा गृह समायोजन किशोरियों में आत्मविष्वास, भावनात्मक स्थिरता तथा सकारात्मक व्यवहार को विकसित करता है। इसके विपरीत, गृह समायोजन में कठिनाई होने पर तनाव, असुरक्षा, आक्रोश तथा व्यवहार संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।
दूसरी ओर, सामाजिक समायोजन का अर्थ है समाज, मित्रों, विद्यालय तथा अन्य सामाजिक समूहों के साथ संतुलित और स्वस्थ संबंध स्थापित करना। सामाजिक समायोजन के माध्यम से किशोरियाँ सहयोग, सहानुभूति, नेतृत्व, संचार कौशल तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास करती हैं। जिन किशोरियों का सामाजिक समायोजन अच्छा होता है, वे समाज में अधिक सक्रिय, आत्मविश्वासी और मानसिक रूप से स्वस्थ पाई जाती हैं।
शहरी परिवेश में रहने वाली किशोरियाँ आधुनिक जीवनशैली, शिक्षा, तकनीकी विकास तथा सामाजिक परिवर्तनों से अधिक प्रभावित होती हैं। शहरी जीवन में प्रतिस्पर्धा, व्यस्तता तथा बदलते पारिवारिक स्वरूप के कारण किशोरियों के गृह एवं सामाजिक समायोजन पर विशेष प्रभाव पड़ता है। यदि परिवार का वातावरण सहयोगात्मक और संतुलित हो, तो किशोरियाँ सामाजिक जीवन में भी बेहतर समायोजन स्थापित कर पाती हैं। इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन "शहरी किशोरियों में गृह समायोजन तथा सामाजिक समायोजन के बीच संबंध का अध्ययन" यह जानने का प्रयास करता है कि परिवार में स्थापित समायोजन का किशोरियों के सामाजिक व्यवहार और सामाजिक संबंधों पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है। यह अध्ययन किशोरियों के मानसिक एवं सामाजिक विकास को समझने तथा उनके समुचित मार्गदर्शन में सहायक सिद्ध होगा।

किशोर शिक्षार्थी की प्रमुख विशेषताएँ

शैक्षिक (Academic)
किशोर अवस्था में स्वयं परीक्षण, निरीक्षण, विचार और तर्क करने की प्रवृत्ति होती है। इसलिए शिक्षण का स्वरूप भी मानसिक विकास, शारीरिक विकास, व्यक्तिगत भिन्नता के अनुरूप होना चाहिए, जिससे किशोर अध्येता उसे अपनी समझ के अनुरूप आसानी से ग्रहण कर सके।

सामाजिक (Social)
किशोर अवस्था में बालक में जीवन दर्शन, नए अनुभवों की इच्छा, निराशा, असफलता आदि के कारण आपराधिक प्रवृत्ति का विकास होता है। समाज–सेवा की भावना का तीव्र विकास होता है। वह स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करना चाहता है। सामाजिक बुराइयों पर अपना तर्क देने लगता है। अतः शिक्षण इस अवस्था में सही मार्ग में सहायक होता है।

भावनात्मक (Emotional)
किशोर अवस्था में भावनात्मक रूप से शिक्षार्थी किसी भी तथ्य को समझने में शीघ्रता करते हैं। वे भावनात्मक प्रवृत्ति के कारण

उचित पथ प्रदर्शन के अभाव में गलत प्रवृत्तियों का शिकार भी हो जाते हैं। अतः शिक्षण का प्रारूप सही मार्गदर्शन वाला होना आवश्यक होना चाहिए।

संज्ञानात्मक (Cognitive)
किशोर अवस्था में मस्तिष्क का लगभग सभी दिशाओं में विकास होता है। वे कल्पना, नैतिक तथा अनैतिक के विषय में सजग हो जाते हैं। अतः शिक्षण क्षेत्र में किशोर की संज्ञानात्मक प्रवृत्ति महत्त्वपूर्ण होती है।

समायोजन का अर्थ (meaning of adjustment)
"समायोजन" का अर्थ होता है कृ अनुकूल बनाने की प्रक्रिया, यानी किसी स्थिति, परिस्थिति या वातावरण के अनुसार स्वयं को ढालना या किसी चीज़ को संतुलित रूप से व्यवस्थित करना। "समायोजन व्यक्ति और पर्यावरण के बीच एक क्रिया और प्रतिक्रिया है। जीवन के हर क्षेत्र में मनुष्य को खुद को समायोजित करना पड़ता है। उसे जीवन के साथ समझौता करना पड़ता है। जब जरूरत पड़ती है तो उसे अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं, महत्वाकांक्षाओं, आदर्शों, मूल्यों, हितों और शौकों का शांति से जीने के लिए उन्हें त्यागना पड़ता है। उसे उन्हें छोड़ने या भूलने के लिए तैयार रहना पड़ता है। उसे परिस्थितियों और बाहरी दुनिया के अनुसार अपने जीवन की योजना बनानी पड़ती है। जीवन भर उसे समझौता करना पड़ता है। हम कह सकते हैं "जीवन का मतलब समझौता है", "जीवन का मतलब समायोजन है" समायोजन का मतलब केवल ऐसा नहीं है कि परिस्थिति को वैसे ही स्वीकार करना और जीवन जीना। 'समायोजन' में इसका उद्देश्य केवल जीना नहीं बल्कि संतुष्टि के साथ जीना है। मनोवैज्ञानिक हरीश केवल एक वाक्य में अंतर बताते हैं, "अनुकूली क्रियाएँ जीवित रहने में योगदान देती हैं जबकि समायोजनात्मक क्रियाएँ तनाव को कम करती हैं"।

उदाहरणों के साथ समझें:
व्यक्तिगत जीवन में
जब कोई व्यक्ति नई नौकरी या नए शहर में जाता है, तो उसे वहाँ की संस्कृति, लोगों और वातावरण के अनुसार समायोजन करना पड़ता है।

वित्तीय रूप में
यदि खर्च अधिक हो जाए, तो आमदनी के अनुसार खर्चों का समायोजन करना होता है।

शैक्षिक संदर्भ में
शिक्षक कक्षा में छात्रों की समझ के स्तर के अनुसार अपने पढ़ाने के तरीके में समायोजन कर सकते हैं।

समायोजन के सिद्धांत (Principle of Adjustment)
समायोजन का सिद्धांत (Principle of Adjustment) मनोविज्ञान में एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जिसका तात्पर्य यह है कि व्यक्ति अपने वातावरण, परिस्थितियों, व्यक्तियों और समाज के अनुसार अपने व्यवहार, सोच और कार्यों में आवश्यक परिवर्तन करता है ताकि वह संतुलन, संतोष और मानसिक स्वास्थ्य बनाए रख सके।

लक्ष्योन्मुख व्यवहार
मनुष्य के प्रत्येक व्यवहार के पीछे कोई न कोई लक्ष्य होता है। वह किसी ऐसी चीज से प्रेरित होता है जो उसे विशिष्ट तरीके से व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती है। व्यवहार के पीछे की आवश्यकता को पूरा करने के लिए व्यक्ति समायोजन करता है।

आवश्यकता की अल्प–संतुष्टि
मनुष्य की आवश्यकताएं असीमित हैं। उन्हें पूरी तरह से संतुष्ट नहीं किया जा सकता। उन्हें संतुष्ट करने के साधन सीमित हैं। सभी आवश्यकताएं पूरी नहीं होती हैं। जब आवश्यकताएं पूरी नहीं होती हैं तो संघर्ष होता है और तनाव दिखाई देता है। ऐसी स्थिति में समायोजन की बहुत आवश्यकता होती है।

कम संघर्षपूर्ण व्यवहार का चुनाव करें
प्रत्येक व्यक्ति अपने इच्छित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए न्यूनतम संघर्ष का चयन करता है। हम कम संघर्षपूर्ण स्थिति को प्राथमिकता देते हैं।

आवश्यकता के बारे में ज्ञान
हम हमेशा यह जानने के लिए उत्सुक रहते हैं कि हमारी कौन सी आवश्यकताएं पूरी होती हैं। यह ज्ञान हमारे भविष्य की संतुष्टि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

पर्यावरण के साथ विशेष संबंध
प्रत्येक व्यक्ति का अपने पर्यावरण के साथ विशेष संबंध होता है। यह उसके जीवन की विशेष ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण होता है। ऐसा इतिहास व्यक्तिगत अनुभवों से बनता है। जैसे एक छात्र का अपने कॉलेज के साथ संबंध काफी व्यक्तिगत होता है। दूसरे कॉलेज के साथ उसका वैसा संबंध नहीं होता।

बव्यवहार पर नियंत्रण
हम दूसरे व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित कर सकते हैं। यह समायोजन के अध्ययन से संभव है। व्यवहार नियंत्रण के माध्यम से सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित होते हैं।

अंतःक्रिया समायोजन का आधार है
समायोजन का दर्शन अंतःक्रिया में निहित है। सफल अंतःक्रिया से अच्छा समायोजन होता है। जैसे छात्र–शिक्षक संबंध। सफल अंतःक्रिया के माध्यम से शैक्षिक समायोजन प्राप्त होता है।

व्यवहार का परिणाम
किसी भी प्रकार के व्यवहार का परिणाम निश्चित होता है। व्यवहार के परिणाम से बचने के लिए कभी–कभी हम अपने व्यवहार के बारे में बहुत सावधान हो जाते हैं। हम अपने व्यवहार के परिणामस्वरूप किसी भी तरह की निराशा नहीं चाहते हैं। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि दूसरे व्यक्ति की प्रतिक्रिया हमारी इच्छित व्यवहार के अनुरूप होनी चाहिए।

समायोजन में निरंतरता
चूँकि मनुष्य की इच्छाएँ असीमित हैं, इसलिए उसका समायोजन निरंतर प्रतीत होता है। वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करता रहता है और इसमें समायोजन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

प्रतीक
हमारा समायोजन कुछ प्रतीकों के माध्यम से परिलक्षित होता है, जैसे चेहरे को विकृत करना, चेहरे पर गुस्सा दिखाना आदि। हम ऐसे हाव–भावों के साथ समायोजन करने का प्रयास करते हैं।
समायोजन का सिद्धांत यह बताता है कि व्यक्ति अपने व्यक्तिगत, सामाजिक व आर्थिक परिवेश में संतुलन बनाए रखने के लिए आंतरिक व बाहरी प्रयास करता है। यह एक सतत प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य, संतोष और समाज के साथ सामंजस्य पर निर्भर होती है।

समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक
(The factors affecting Adjustment)

समायोजन एक ऐसी स्थिति है, जिसमें कोई बालक, विद्यार्थी, शिक्षक समझौतावादी स्वभाव प्रदर्शित करता है तथा इस दृष्टिकोण के माध्यम से वह अपनी रुचि के अध्ययन में शामिल होता है तथा बालक स्वयं का विकास करना सीखता है, जिसके परिणामस्वरूप वह इच्छित लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर लेता है। सामान्यतः समायोजन को तीन कारक प्रभावित करते हैं।

घर (home)

घर समाज का एक अंग है। विद्यालय समाज का दूसरा अंग है। बालक घर से समायोजन का पाठ सीखता है तथा संसार के लिए तैयार होता है। वह बड़ों से सीखता है। वह अनुशासन, सद्गुण, प्रेम, दान, दया, अध्ययन, अच्छी आदतें, आदर, सम्मान, गरिमा, नए विषयों को सीखने से सीखता है। वह अपने बड़ों के प्रति प्रतिबद्ध है और अपने माता–पिता के मार्गदर्शन का पालन करता है। समायोजन घर से शुरू होता है। माता–पिता को घर में समायोज्य वातावरण बनाना चाहिए।

विद्यालय (school)

विद्यालय जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। छात्रों को शिक्षण और प्रशिक्षण के माध्यम से जीवन के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। बच्चों को सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से स्कूल में प्रशिक्षित किया जाता है। बच्चों को स्कूल में वह सिखाया जाता है जो उन्होंने अपने घरों में नहीं सीखा है। साथ ही वह अच्छे और बुरे के बीच का अंतर भी सीखता है, उसे अच्छे और बुरे के बीच अंतर करने में सक्षम होना चाहिए। वह अनुशासन सीखता है और समाज का सभ्य नागरिक बनने के लिए खुद को तैयार करता है। बच्चे का समग्र व्यक्तित्व स्कूल में विकसित होता है। उसे समाज के विभिन्न स्तरों के बच्चों के साथ घुलने–मिलने का अवसर मिलता है। वह उनके साथ पढ़ना, खेलना पसंद करता है। वह संगीत, चित्रकला आदि विषयों में उनके साथ प्रतिस्पर्धा करना पसंद करता है। यह सहयोगी जीवन है। वह खुद को दूसरों के स्वभाव के साथ समायोजित कर लेता है। वह खुद को समायोजन के लिए प्रशिक्षित करता है।

समाज (society)

कुछ शिक्षा पूरी करने के बाद बच्चा समाज में प्रवेश करता है। पढ़ाई के दौरान उसमें कुछ परिवर्तन होते हैं। यह समाज की मान्यता है। ऐसे बच्चों से समाज की अपेक्षाएँ बहुत अधिक होती हैं। अगर बच्चे ने स्कूल के दिनों से ही समायोजन करना सीख लिया है, तो वह जीवन में किसी भी तरह की परिस्थिति में बहुत अच्छी तरह से समायोजित हो सकता है। ऐसे बच्चों को समाज द्वारा स्वीकार किया जाता है। वह घर, स्कूल, समाज में समायोजन करता है और धीरे–धीरे एक अच्छा नागरिक बन जाता है। समायोजन उसे एक अच्छा नागरिक बनने में मदद करता है (शाह–2000)।

साहित्य समीक्षा

स्टाइनबर्ग एट अल 1992), " माता–पिता की भागीदारी किशोरों की स्कूल की सफलता को बढ़ावा देने की अधिक संभावना है जब यह एक आधिकारिक घरेलू वातावरण के संदर्भ में होती है।

यह देखा गया है कि घरेलू वातावरण बच्चों के समग्र विकास को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक है। घर के भीतर, बच्चों की अपने परिवार के सदस्यों के साथ शुरुआती बातचीत भी होती है, और सीखने और खेलने के लिए संसाधनों की उपलब्धता और गुणवत्ता काफी हद तक इन बातचीत की प्रकृति को निर्धारित करती है। उत्तेजक वस्तुओं, पुस्तकों और खेल की उपलब्धता। घर के भीतर मौजूद सामग्रियां घरेलू वातावरण की समग्र गुणवत्ता के लिए महत्वपूर्ण संकेतक हैं। अतीत में, घरों और समुदायों के भौतिक वातावरण पर शोध मुख्य रूप से पर्यावरणीय खतरों, पर्यावरणीय तनाव और गरीबी के प्रभावों पर केंद्रित था। शोध के इस निकाय ने दृढ़ता से संकेत दिया कि घर के भौतिक पहलू जैसे स्वच्छता, पानी, शोर और प्रदूषण बच्चों के समग्र स्वास्थ्य और विकास को प्रभावित करते हैं। (इवांस, 2003; गुओ और हैरिस, 2000)। हाल ही में, घरेलू वातावरण की गुणवत्ता और बाल विकास पर उनके प्रभाव पर शोधकर्ताओं के बीच रुचि बढ़ रही है। (एंसेल और वैन ब्लर्क 2005; इवांस, 2006; फ्लोर्स, 2004; लेवेंथल, 2004; रोड्रिग्स, सारावा और गैबार्ड, 2005)।

बिरेडा ए.डी. (2015) ने इथियोपियाई किशोरों में माता–पिता की गर्मजोशी एवं समायोजन के संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि जिन किशोरों को माता–पिता से अधिक स्नेह, समर्थन एवं भावनात्मक सुरक्षा प्राप्त होती है, उनमें समायोजन स्तर अधिक सकारात्मक पाया जाता है। पारिवारिक सहयोग किशोरों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और इससे उनके व्यवहार तथा आत्मविश्वास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

बरमोला के. सी. (2013) ने किशोरों के पारिवारिक वातावरण, मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षणिक प्रदर्शन के मध्य संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि सकारात्मक पारिवारिक वातावरण किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षणिक उपलब्धि को बेहतर बनाता है। जिन किशोरों को परिवार से सहयोग, सुरक्षा एवं प्रोत्साहन प्राप्त होता है, वे मानसिक रूप से अधिक स्वस्थ एवं शैक्षणिक रूप से अधिक सफल पाए गए। इसके विपरीत तनावपूर्ण पारिवारिक वातावरण किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य तथा अध्ययन प्रदर्शन को प्रभावित करता है।

अहमद गुल एवं एस.बी. (2015) ने जम्मू और कश्मीर की किशोरियों पर सामाजिक–भावनात्मक समायोजन के शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि जिन किशोरियों का सामाजिक एवं भावनात्मक समायोजन बेहतर था, उनकी शैक्षणिक उपलब्धि भी अधिक थी। शोध से यह स्पष्ट हुआ कि विद्यालयी वातावरण, पारिवारिक सहयोग तथा भावनात्मक संतुलन किशोरियों के शैक्षणिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अध्ययन ने यह भी संकेत दिया कि कमजोर सामाजिक–भावनात्मक समायोजन शैक्षणिक प्रदर्शन को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है।

शशिकला मार्फिन (2013) ने कन्याकुमारी जिले के किशोरों के व्यक्तिगत और सामाजिक समायोजन की जांच उनकी माताओं की रोजगार स्थिति के संबंध में की। अध्ययन के नमूने में कक्षा 9 के 423 छात्र शामिल थे, जिनमें से 229 कार्यरत माताएँ और 194 बेरोजगार माताएँ थीं। किशोरों के व्यक्तिगत और सामाजिक समायोजन के स्तर को मापने के लिए व्यक्तिगत और सामाजिक समायोजन पर प्रश्नावली और कार्यरत माताओं के लिए साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया। परिणामों से पता चला कि जब कुल नमूने की बात की जाती है तो माताओं की रोजगार स्थिति किशोरों के व्यक्तिगत समायोजन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। उनकी माँ की रोजगार स्थिति किशोरों के सामाजिक समायोजन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं करती है।

अध्ययन के उद्देश्य (Objectives)

शहरी किशोरियों में गृह समायोजन तथा सामाजिक समायोजन के बीच संबंध का अध्ययन करना।

परिकल्पना (Hypotheses)

1. शून्य परिकल्पना (Null Hypothesis – H_0)

शहरी किशोरियों के गृह समायोजन तथा सामाजिक समायोजन के बीच कोई सार्थक (महत्वपूर्ण) अन्तर नहीं होगा।

विधि (methodology)

नमूना (sample)

अध्ययन में बक्सर जिला के कॉलेज जाने वाली विज्ञान संकाय की 50 शहरी किशोरियों को यादृच्छिक रूप से सम्मिलित किया गया है।

उपकरण (Tool)

Bell Adjustment Inventory (BAI) का उपयोग किया गया, जिसमें गृह समायोजन और सामाजिक समायोजन दो आयाम मापे गए।

सांख्यिकीय तकनीक (Statistical Techniques)

औसत (Mean), मानक विचलन (SD) सहसंबंध तथा ज–जमेज का प्रयोग किया गया।

डेटा विश्लेषण (Data Analysis)

वर्णनात्मक सांख्यिकी (Descriptive Statistics)

चर	N	माध्य	मानक विचलन
गृह समायोजन	50	13.26	5.52
सामाजिक समायोजन	50	12.70	4.82

गृह समायोजन का माध्य 13.26 तथा सामाजिक समायोजन का माध्य 12.70 प्राप्त हुआ। उच्च अंक कमजोर समायोजन को दर्शाते हैं, इसलिए अधिक माध्य कमजोर समायोजन को इंगित करता है।

परीक्षण (Paired t-test)

t–मूल्य	p–मूल्य	निर्णय	व्याख्य
0.68	0.501	परिकल्पना स्वीकार	कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया

t–परीक्षण के अनुसार t = 0.68 तथा p = 0.501 प्राप्त हुआ। इससे स्पष्ट है कि गृह समायोजन एवं सामाजिक समायोजन के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सहसंबंध विश्लेषण (Correlation)

सहसंबंध गुणांक (r)	p–मूल्य	व्याख्या
0.37	0.009	धनात्मक संबंध पाया गया

गृह समायोजन एवं सामाजिक समायोजन के बीच r = 0.37 का सहसंबंध प्राप्त हुआ, जो कि धनात्मक संबंध पाया गया।

ग्राफ

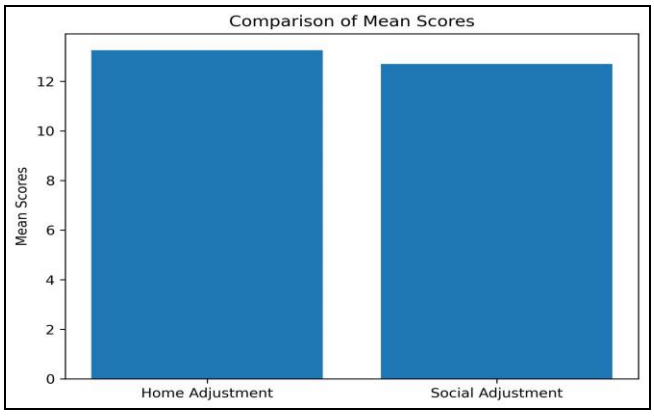

परिणाम

अध्ययन में पाया गया कि गृह समायोजन और सामाजिक समायोजन के माध्य अंकों में बहुत अधिक अन्तर नहीं है। t–परीक्षण के आधार पर दोनों चरों के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अन्तर नहीं पाया गया।

व्याख्या

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शहरी विज्ञान वर्ग की किशोरियों का गृह एवं सामाजिक समायोजन लगभग समान स्तर का है। उच्च अंक कमजोर समायोजन को दर्शाते हैं, इसलिए दोनों क्षेत्रों में समायोजन की स्थिति मध्यम स्तर की दिखाई देती है।

निष्कर्ष

अध्ययन के निष्कर्ष के अनुसार शहरी किशोरियों के गृह समायोजन तथा सामाजिक समायोजन के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः प्रस्तुत शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

सुझाव

- किशोरियों के लिए परामर्श एवं मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
- विद्यालयों में सामाजिक कौशल विकास कार्यक्रम चलाए जाएँ।
- अभिभावकों को सकारात्मक पारिवारिक वातावरण बनाने हेतु प्रेरित किया जाए।
- किशोरियों में आत्मविश्वास एवं संप्रेषण कौशल का विकास किया जाए।

सन्दर्भ

1. स्टाइनबर्ग, एल. (2001). हम कुछ बातें जानते हैं: माता–पिता–किशोर संबंध पूर्वव्यापी और भविष्य में। किशोरावस्था अनुसंधान पत्रिका, 11(1), 1–19.
2. स्टाइनबर्ग, एल. डी. (2014). अवसर की उम्र: किशोरावस्था के नए विज्ञान से सबक। हौटन मिफ्लिन हरकोर्ट स्टीवंसन, एच. डब्ल्यू., और जुशो, ए. (2002). बदलते परिवेश के अनुकूल होना। विष्व का युवाः विश्व के आठ क्षेत्रों में किशोरावस्था,141.
3. अहमद गुल, एस.बी. (2015)। जम्मू और कश्मीर में किशोरियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर सामाजिक–भावनात्मक समायोजन का प्रभाव। एक बहुविषयक रेफरीड रिसर्च जर्नल, 5(3),2–28।
4. मटुड, एम. पी., लोपेज़–करबेलो, एम., और फोर्टेस, डी. (2019)। लिंग और मनोवैज्ञानिक कल्याण। अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण अनुसंधान और सार्वजनिक स्वास्थ्य पत्रिका,16(19), 3531। https://doi.org/10.3390/ijerph16193531
5. बिरेडा, ए.डी., (2015)। इथियोपियाई किशोरों के बीच माता–पिता की गर्मजोशी और समायोजन को महसूस किया गया। अफ़्रीका में मनोविज्ञान जर्नल. 25(5), 473–476
6. बरमोला, के. सी. (2013)। किशोरों का पारिवारिक वातावरण, मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षणिक प्रदर्शन। समाजशास्त्र,2(12)।